an>

Title: Need to commemorate the 100th Martyrdom Day of Saheed Kartar Singh Sarabha.

श्री स्वनीत सिंह (लुधियाना) : मैडम, मैं आपके माध्यम से, देश की आजादी की लड़ाई में सिर्फ 19 साल की छोटी उम्र में फांसी का फन्दा चूमने वाले पंजाब के बहादुर कौमी सपूत शहीद करतार सिंह सराभा, जिन्होंने 16 नवम्बर, 1915 को लाहौर जेल में फांसी का फन्दा चूमा, उनकी कुर्बानी की तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं। वर्ष 1896 में लुधियाना जिले के गांव सराभा में करतार सिंह ने जन्म लिया और देश को अंग्रेजों से आजाद कराने के लिए अमेरिका में अपनी बहुत ही छोटी उम्र में, 15 सितम्बर, 1914 में पढ़ाई छोड़कर गदर लहर में कूदे। यहां आकर उन्होंने गदर पार्टी के क्रान्तिकारी अखबार की प्रिंटिंग की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने अपनी पोयट्री और आर्टिकल्स के माध्यम से देशवासियों को जागृत करना शुरू किया और विदेशी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष शुरू करने के लिए प्रेरित करना शुरू किया। इस दौरान वह अपने अलग-अलग साथियों के साथ अलग-अलग केंटोनमेंट में जाकर सैनिकों को विदेशी हुकूमत के खिलाफ हथियार उठाने के लिए प्रेरित करते रहे। उन्हें लाहौर में 13 सितम्बर, 1915 को फांसी की सजा सुनाई गई। बड़ी बात यह है कि शहीद करतार सिंह सराबा, जिन्होंने बहुत बड़ी देशभक्ति की मिसाल पेश की, जब भगत सिंह जी को फांसी पर लटकाने के लिए ले जाया जा रहा था तो उनकी जेब में शहीद करतार सिंह सराबा की फोटो थी। भगत सिंह जी ने कहा था कि मैं करतार सिंह सराबा जी को अपना गुरु मानता हूं। इतनी बड़ी करतार सिंह जी की देशभक्ति के प्रति भावना थी। मेरी सरकार से गुजारिश है और मांग है कि करतार सिंह सराबा जी को शहीद हुए 100 साल हो रहे हैं, अतः सरकार उनकी याद में एक डाक टिकट जारी करे। इसके साथ ही उनकी फोटो वाला एक सिक्का भी जारी करे। उन्होंने देश की खातिर शहादत की है इसलिए उनकी याद में एक ब्रेवरी एवार्ड उनकी तस्वीर के साथ घोषित करे।

माननीय अध्यक्ष:

श्री निशिकांत दुबे,

श्री शशि थरूर,

श्री भगवंत मान,

डॉ.ए. सम्पत,

श्री बदरूद्दीन अजमल,

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को श्री स्वनीत सिंह द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।